जुगनू की प्रणयलीला

क्या बताता है जुगनू चमक कर . . . गर कोई पूछे तो क्या करें। वैसे इस उलझन में न फंसें फिर भी अंधेरे में हवा में उड़ती, चमकती, बुझती और फिर से चमकती चीज़ कौतूहल तो पैदा करती ही है। दरअसल जुगनू का चमकना वैसे ही है जैसे कि मेढकों का टर्राना, झींगुर का खनकती हुई आवाज़ में चिल्लाना जो कभी-कभी तो इतनी तेज़ होती है कि कान पर हाथ रखने को मजबूर कर देती है।

चलिए थोड़ी साफगोई से बात करते हैं। ज़रा गौर से जुगनू के चमकने और बुझने पर नज़र रखिए। इनके जलने, बुझने और फिर जलने के बीच एक निश्चित अंतराल होता है। एक प्रजाति के नर और मादा दोनों में यह लय मौजूद होती है। जुगनू की अलग-अलग प्रजातियों में यह लय फर्क-फर्क होती है (देखिए चित्र)। इसी लय के आधार पर प्रजाति विशेष की मादा अपनी प्रजाति के नर को और नर, मादा को पहचानता है।

जो जुगनू हमें यहां वहां उड़कर रोशनी जलाता और बुझाता दिखता है वो आमतौर पर नर होता है। मादा कहीं पेड़, झाड़ियों के बीच बैठी रहती है। वह उड़ते नर की लय को देखती है और उसी लय में उसे अपनी उपस्थिति की जगह का संकेत देती है। और नर पहुंच जाता है उसके पास ।

वैसे जुगनुओं के बीच सिर्फ इस लय का ही फर्क नहीं होता बल्कि यह फर्क जुगनू से निकलने वाले प्रकाश के रंग का, या उसकी तीव्रता का भी हो सकता है। दक्षिण अमेरिका और वेस्ट इंडीज़ में पाया जाने वाला एक जुगनू तो इतना चमकीला प्रकाश फेंकता है कि वहां के लोग कई जुगनुओं को पकड़कर किसी छेददार बर्तन में भर देते हैं और ये जुगनू उनके घर को रोशनी से भर देते हैं।

तो अबकी बार किसी जुगनू को देखें तो उससे निकलने वाले प्रकाश पर मुग्ध होने के साथ-ही उसकी चमकने बुझने की आवृति पर भी गौर कीजिएगा। और हां, झींगुर और मेंढक वाली बात हम भूले नहीं हैं, उस पर भी चर्चा करेंगे, लेकिन अभी नहीं!